श्री गणेशाय नमः







विजयादशमी पौराणिक शस्त्रपूजन विधि

सामग्री – लालवस्त्र, लालरोली, रक्तचंदन, रक्ताक्षत, गुड़हल या रक्तकनेर का पुष्प, घृत तेल दीप, कुष्माण्डफल, सिंदूर, चम्पा इत्र, गुग्गल अगरबत्ती। गुड़–धनिया साबूत नैवेद्य पेड़े, ५ ताम्बूल सुपारी के टुकड़े, चनीकबाला, लौंग इलायची मुलहठी पाऊडर, बराश, सौंफ कत्था जायफल का बारीक पाउडर।

1. इलायचीचूर्ण+जायफलचूर्ण+सौंफ+१/४ बराश+ मुलहठी+ चीनकबाला+१/४ कत्थापाउडर +सूपारीटुकड़े– सब मिलाकर **मुखवास** बना लें। फिर ताम्बूल का अग्र एवं पिछला दण्डीवाला थोडा भाग तोडकर ताम्बूल में मुखवास लेकर **पानबीडा बनावें।** उसमें १/१ लौंग रख देवें ।
2. लालवस्त्र बिछाकर नोंक मुठ्ठा पूर्व–पश्चिम सीधीरेखा में अलग अलग तलवार धारवाला भाग दक्षिण में रहे इस तरह रखें।
3. तलवार की दायीं ओर **घृतदीप** और बायीं ओर **तेलदीप** प्रकटावें– (ह्रीं)शक्तिबीज
4. **आचमन** करें– ह्रीं आत्मतत्त्वाय नमः ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमः ह्रीं शिवतत्त्वाय नमः
5. हाथ धोकर तीन–तीन आवृत्ति का पूरक कुम्भक रेचक **प्राणायाम** करे–''ह्रीं चण्डिकायै नमः'' मन्त्र से।
6. सुवासिनी वीरांगना के अंगूठे से यजमान अपने ललाट में **तिलक** करावे। तिलक के ऊपर **दूसरी** बार तिलक खींचे, चावल छिड़कें।
7. अपने शरीर पर जल छिड़कें – पुण्डरीकाक्षाय नमः।
8. रक्ताक्षतपुष्प लेकर – **गणपति का स्मरण** करें ''वक्रतुण्ड महाकाय०० आदि महागणपतये नमः पूजां समर्पयामि।''
9. रक्ताक्षत लेकर तलवार में रही **रणचण्डी का स्वागत** करे – एह्येही रणचण्डिके स्वागता भव । (रक्ताक्षत तलवार पर चढ़ायें)
10. **संकल्प** करें –– अमुकवर्माऽहं चण्डिकाप्रीतिकामेन खड्गपूजा कुष्माण्डबलिदानं च करिष्ये।
11. पुष्प चढाकर तलवार में **काली का स्मरण** करें–

असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।

शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्॥

कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्ररक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्।।
रक्ताबरधरं चौव पाशहस्तं कुटुम्बिनम्।

पीयमानं च रुधिर भुञ्जानं त्रव्यसंहतिम्।
रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधिकाः।।

12. ह्रीं खड्गाय नमः – मन्त्र से **जलपुष्पयुक्तपाद्यम् , अक्षतपुष्पजलयुक्त अर्घ्यम्, सुवासितमाचमनीयम्** – समर्पयामि।
13. तलवार पर तीन बड़े–बड़े **तिलक** अंगूठे से करें ––
मन्त्रः – ह्रीं ह्रीं खड्ग आं कालि कालि वज्रेश्वरि लोहदण्डाय नमः।
14. नोंक के भाग में **सिन्दूर** से (ह्रीं) शक्तिबीज को **लिखें**।
15. पुनः **रक्ताक्षतपुष्पांजलि** से पूजन करें– ''ह्रीं खड्गाय नमः''
16. **धूप दीप नैवेद्य भोग** लगावें । पांच **पानबीडा** अर्पण करें।
17. **नमस्कार** करें –

अतिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः ।
श्री गर्भो विजयश्चौव धर्मपाल नमोस्तु ते ॥ १ ॥
इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा ।
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः ॥२॥
रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः ।
पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा ॥ ३ ॥
नीलजी मूतसंकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः ।
भावशुद्धो महाश्च अतितेजास्तथैव च ॥ ४ ॥
इयं येन घृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः ।
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥ ५ ॥

चण्डिकारसनासि त्वमेकपातेन घातय ॥ ६॥

18. कुष्मांडफल की शिखा पूर्व में रहे इस तरह किसी पत्तल में **कुष्माण्ड** को रखें – **कुष्माण्ड** का ''ह्रीं श्रीं'' मन्त्र से **प्रोक्षण कर रक्तचंदनरौली का लेप** करें। इस मन्त्र से रक्ताक्षतपुष्प चढावे–

चण्डिकाप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने।
चण्डिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः।।

19. **उत्तराभिमुख वीरासन**(बायां घुटना ऊंचा, दायाँ पैर पीछे करके घुटना भूमिको छूए) में दाहिने हाथ से तलवार को पकड़ें। इस समय ढोल मृदंग ताल घण्ट भेरी आदि नाद भी हो।
20. **एक ही घात** में कुष्माण्ड के **दो भाग** करें – ह्रीं काली काली वज्रेश्वरि लोहदण्डाय नमः।।
21. कुष्माण्ड का शिखावाला कटेभाग में से कुछ अंश लेकर **चण्डिका को अर्पण** करें– ''ह्रीं श्रीं कौशिकी रूधिरेणाप्ययताम्''। (पूजन समाप्ति के पश्चात् शस्त्र द्वारा चढ़ायी बलि को स्वयं ग्रहण नहीं कर सकते। देवी को अर्पण बलि को गाय को खिला सकते हैं)
22. उसी भाग के चार टुकडे और करें। एक एक भाग पर एक एक मन्त्र पढकर पुष्पजल छोड़ें–

चरक्यैनमः बलिं निवेदयामि।
विदार्यै नमः बलिं निवेदयामि।
पूतनायै नमः बलिं निवेदयामि।
पापराक्षस्यै नमः बलिं निवेदयामि।

(पूजन के पश्चात् उपरोक्त बलिभाग को मार्ग पर ऐसे स्थान पर रख देना चाहिए, जहाँ किसी व्यक्ति का पैर न पड़े)

23. शेष आधे टुकडे पर रक्ताक्षत पुष्प चढाकर प्रार्थना करते हुए **चौराहे** पर रख देवें , पीछे मुडकर उसे न देखते हुए वापस चले आयें। मन्त्र–

बलिं गृह्णत्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा ।
मरुतो येश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ।। १ ।।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ २ ॥
जृम्भिकाः सिद्धगंधर्वा मल्ला विद्याधरा नगाः ।
दिक्पालाः लोकपालाश्च ये च विघ्नविनाश काः ॥ ३ ॥
जगतां शांतिकर्तारी ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ।
मा विघ्नो मा च मे पापं मा संतु परिपंथिनः ॥ ४ ॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।। ५ ।।

24. **आचमन करके नमस्कार** करें–

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।

25. तलवार पर अक्षत चढाते हुए देवी का **विसर्जन** करें – प्रयान्तु महादेवि !

26. **प्रसाद बाँटे**।

धर्म की जय हो।
अधर्म का नाश हो।
प्राणियों में सद्भावना हो।
विश्व का कल्याण हो।
गौमाता की जय हो।
गौहत्या बंद हो।
भारत अखंड हो।
हर हिन्दू सेना हो।
हर हिन्दू सनातनी हो।

किशन जोशी